आर० आर० एस० कॉलेज मोकामा

विषय - राजनीति विज्ञान

स्नातक प्रतिष्ठा पार्ट - III Paper - V

डॉ० उमेश चन्द्र शुक्ल
एसो० प्रोफेसर - राजनीति विज्ञान

लोक प्रशासन एवं निजी प्रशासन

प्रशासन के दो आयामों की बात की जाती है। लोक प्रशासन और निजी प्रशासन। लोक प्रशासन का तात्पर्य लोकहित से संबद्ध प्रशासकीय कार्यों से है। इसकी रूपरेखा इसके पीछे कानून एवं प्रशासन की शक्ति, इसके कार्मिकों की सेवाशर्तें आदि में औपचारिकता का पालन अनिवार्य होता है। इसके विपरीत एक बहुत बड़ा क्षेत्र ऐसा भी है जहाँ लोक प्रशासन नहीं, बल्कि निजी प्रशासन देखने को मिलता है। यह क्षेत्र भी काफी फल-फूल रहा है तथा कई प्रकार के राजनीतिक एवं सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करता है। सच है कि इसका प्रशासकीय ढाँचा, उद्देश्य कर्मियों की सेवा शर्तें भिन्न होती हैं। इसके पीछे मूल भावना लाभ कमाने की होती है तथा ढाँचागत औपचारिकता का अभाव रहता है। इसके बावजूद इसकी लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। जनसेवा का बड़ा क्षेत्र इससे जुड़ता जा रहा है। अतः इन दोनों प्रशासनों का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है।

इस तुलनात्मक अध्ययन को तीन स्तरों में देखा जा सकता है - समानता की दृष्टि से, असमानता की दृष्टि से तथा तीसरा दृष्टिकोण यह है कि दोनों की प्रशासनों ने एक दूसरे की अच्छाईयों को अपना कर प्रशासकीय क्षमता को बढ़ाने का प्रयास किया है।

A - समानता का दृष्टिकोण -

कई लेखकों एवं विचारकों ने इन दोनों प्रशासनों के बीच समानता की बात की है। हेनरी फेयोल, उर्विक, मेरी पार्कर आदि का यही दृष्टिकोण है। फेयोल ने लिखा है, "We are no longer confronted with several administrative sciences but with one which can be applied equally well to

Scanned with CamScanner

Public and to Private affairs.

लोक प्रशासन और निजी प्रशासन के बीच समानता की दृष्टि से निम्न तर्क दिये जाते हैं –

(I) संगठन की आवश्यकता – लोक प्रशासन और निजी प्रशासन दोनों में ही संगठन की आवश्यकता समान रूप से पड़ती है। संगठन के चारों आधारों – व्यक्ति, स्थान, उद्देश्य और प्रक्रिया दोनों ही प्रशासनों में सामान्य रूप में देखने को मिलता है।

(II) कार्य प्रणाली – कार्य प्रणाली की दृष्टि से भी दोनों प्रशासन में समानता पाई जाती है। नियोजन, समन्वय, संचार, आदेश की एकता, पदसोपान आदि का स्वरूप दोनों प्रशासन में एक ही जैसा होता है।

(III) समान दायित्व बोध – दोनों ही प्रशासन में कार्यरत कार्मिकों का अपने कार्य के प्रति दायित्व बोध समान होता है। अपने दायित्वों का निर्वाह करना और इसकी आवश्यकता पड़ने पर कार्रवाई का सामना दोनों प्रशासनों में समान रूप से होता है।

(IV) जनसंपर्क – दोनों ही प्रशासन संगठन के कार्यों के संदर्भ में आवश्यक जनसंपर्क अभियान का संचालन समान रूप से करते हैं।

(V) अन्वेषण – प्रशासनिक चुनौतियों का सामना करने एवं विकास की दृष्टि से दोनों ही प्रशासन में अन्वेषण की प्रक्रिया एक जैसी चलती है। इस हेतु दोनों ही प्रशासनों में कर्मचारियों को शोधकार्य के लिए भी लगाया जाता है।

इस प्रकार कई दृष्टियों से दोनों ही प्रशासन के बीच समानता के तत्व देखे जाते हैं।

B. <u>असमानता का दृष्टिकोण</u> :–

लोक प्रशासन तथा निजी प्रशासन में असमानता का दृष्टिकोण रखने वाले विचारकों में साइमन तथा एपिलबी प्रमुख हैं। साइमन के अनुसार लोक प्रशासन राजनीति से परिपूर्ण नौकरशाही और लालफीताशाही पर आधारित है जबकि निजी प्रशासन राजनीति शून्य और चुस्ती से काम करने वाला होता है।

Scanned with CamScanner

एपलबी के अनुसार लोक प्रशासन निजी प्रशासन से तीन कारणों से भिन्न है — (i) इसका चरित्र राजनीतिक होता है। (ii) इसका क्षेत्र व्यापक होता है तथा (iii) यह जनता के प्रति उत्तरदायी होता है।

दोनों प्रशासनों के बीच अन्तर को निम्न आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है —

(1) लाभ के आधार पर — निजी प्रशासन का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना है। यहाँ कार्य कुशलता की कसौटी भी लाभ ही है। इसके विपरीत लोक प्रशासन का उद्देश्य लाभ नहीं बल्कि लोककल्याण है। स्वास्थ्य, शिक्षा, आपदा प्रबंधन की दृष्टि से लोकप्रशासन का उद्देश्य देखा जा सकता है।

(2) उत्तरदायित्व — लोकप्रशासन का उत्तरदायित्व सार्वजनिक रूप से जनता, सरकार, संविधान के प्रति होता है। इसके विपरीत निजी प्रशासन में अपने प्रशासनिक महकमें के संचालक के प्रति होता है।

(3) व्यवहार में एकरूपता — लोकप्रशासन में व्यवहार की एकरूपता का सिद्धांत पाया जाता है। एक विधि सम्मत प्रक्रिया का पालन अनिवार्य होता है। इसमें किसी के लाभ विशिष्ट व्यवहार अपराध माना जाता है। निजी प्रशासन में ~~उद्यम~~ उद्यम की आवश्यकता एवं लाभ की दृष्टि से व्यवहार में एकरूपता नहीं भिन्नता पाई जाती है।

(4) एकाधिकार की दृष्टि से — लोकप्रशासन में एकाधिकार नाम की कोई बात नहीं होती है। अगर देखा जाए तो एकाधिकार सरकार का होता है। निजी प्रशासन में एकाधिकार व्यक्ति के रूप में संचालक तथा उसके कोई स्टॉफ ऑपरेटर का होता है।

(5) भिन्न आचार संहिता — लोकप्रशासन में विभिन्न कार्यों के संदर्भ में औपचारिकताओं का पालन अनिवार्य होता है, जबकि निजी प्रशासन में कार्य की महत्ता की दृष्टि से औपचारिकताएँ शिथिल रहती है। परिणाम स्वरूप लोकप्रशासन में लालफीताशाही की संभावना रहती है। निजी प्रशासन में लालफीताशाही का कोई स्थान नहीं है।

(6) सेवी वर्ग की सुरक्षा — लोकप्रशासन की सेवाशर्तों के अनुसार सेवीवर्ग सुरक्षित माने जाते हैं। निजी प्रशासन में सेवीवर्ग हमेशा अपने को असुरक्षित समझते हैं।

Scanned with CamScanner

7. वित्तीय नियंत्रण – लोक प्रशासन में वित्तीय नियंत्रण की एक विधि सम्मत प्रक्रिया है। निजी प्रशासन में वित्तीय नियंत्रण उनके हाथों में होता है, जो पूंजीनिवेश करते हैं।

8. क्षेत्र की दृष्टि से – लोक प्रशासन का क्षेत्र व्यापक होता है, जबकि निजी प्रशासन कुछ विशिष्ट क्षेत्रों में ही उपयोगी हो सकता है।

लोकप्रशासन तथा निजी प्रशासन की समानता – असमानता के उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में स्थिति भिन्न है। आज दोनों ही प्रशासनिक तंत्र एक दूसरे के गुणों को अपनाते हुए सक्षम परिणाम देने की खोज में हैं। लोक प्रशासन आज निजी प्रशासन की कार्यकुशलता को अपनाना चाहता है, तो निजी प्रशासन भी लोकप्रशासन के पारदर्शिता, एकरूपता, वित्तीय अनुशासन तथा सेवाशर्तों को अपनाना चाहता है। आज लोकप्रशासन में निगम तथा स्वतंत्र नियामक आयोग की व्यवस्था इसी का परिणाम है। निजी प्रशासन में भी अच्छी सेवाशर्तों के कारण कार्मिक कार्य करने को उत्सुक हैं। हैदराबाद में Administrative Staff College में सरकारी तथा निजी दोनों क्षेत्रों के प्रशासकों के लिए Training का प्रबंध है। अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि लोक प्रशासन और निजी प्रशासन के बीच की खाई दिनोंदिन कमती जा रही है। आज दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

[signature]